इकाई 10 लातिन अमेरिकी साहित्य के वैश्विक अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 लातिन अमेरिकी साहित्य को समझना

10.3 लातिन अमेरिकी साहित्य का अवलोकन

- 10.3.1 लातिन अमेरिका का स्पेनी साहित्य
- 10.3.2 लातिन अमेरिका का फ्रांसीसी साहित्य
- 10.3.3 लातिन अमेरिका का पुर्तगाली साहित्य

10.4 लातिन अमेरिकी महत्वपूर्ण लेखक

- 10.4.1 लातिन अमेरिकी स्पेनी लेखन
- 10.4.2 लातिन अमेरिकी पुर्तगाली लेखन
- 10.4.3 लातिन अमेरिकी फ्रांसीसी लेखन

10.5 सारांश

10.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- लातिन अमेरिकी साहित्य को समझ सकेंगे;
- लातिन अमेरिकी साहित्य का परिचय प्राप्त कर सकेंगें; और
- लातिन अमेरिकी स्पेनी; पुर्तगाली तथा फ्रासीसी साहित्य से परिचित होंगे।

10.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम मुख्यतया अध्ययन करेंगे कि कैसे लातिन अमेरिकी साहित्य अनूदित हुआ तथा विश्व में प्रस्तुत हुआ है। आप जानते हैं, कि हाल के समय में दक्षिण अमेरिका अपनी सांस्कृतिक एवं राजनैतिक महत्ता के कारण बहुत महत्वपूर्ण रहा है। यद्यपि यहां पर बहुत सारे स्पेनी भाषी छोटे देश हैं; पुर्तगाली भाषी बड़ा देश (ब्राज़ील) तथा कई दूसरे फ्रांसीसी एवं अंग्रेज़ी भाषी छोटे देश एवं द्वीप भी हैं, जिनमें यहां तक कि हिंदी अथवा अन्य भारतीय भाषाएं भी बोली जाती हैं। कुछ भारतीय भाषा भाषी क्षेत्र त्रिनिदाद, टोबैगो तथा सूरीनाम हैं।

इन लातिन अमेरिकी देशों से विभिन्न भाषाओं में बड़ी मात्रा में अच्छा साहित्य आया है। जैसा कि यहां अधिकतर स्पेनी भाषी देश हैं, हम देखते हैं, कि महत्वपूर्ण लातिन अमेरिकी साहित्य अधिकांशतः स्पेनी भाषा में है। लेकिन यहां पर पुर्तगाली तथा फ्रांसीसी भाषा में भी अच्छे लातिन लेखक हैं, जिनका विश्व की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है। भारत में हमने दक्षिण अमेरिका के अंग्रेजी पाठों का सीधा अभिग्रहण किया है, और इस कारण इनका अभिग्रहण अपने आप में ही अनुवाद का एक मुद्दा है। इस इकाई में हम लातिन अमेरिकी साहित्य को समझेंगे तथा लातिन अमेरिकी साहित्य एवं इसके अनुवाद के सभी पहलुओं का अध्ययन करेंगे।

10.2 लातिन अमेरिकी साहित्य को समझना

यूरोपीयन लोगो ने लातिन अमेरिका की दूसरी सहस्त्राब्दी के पूर्वार्ध (लगभग 1200-1600 ई. के बीच) में अपनी बस्तियां बनाना शुरू किया और उसके बाद 20वीं सदी में कठोर राष्ट्र-राज्य कानून बनने तक यूरोप तथा लातिन अमेरिकी देशों के बीच लोगों का मुक्त आवागमन रहा। यूरोपीय लोगों के लातिन अमेरिकी देशों में बसने से पूर्व वहां पहले से ही सांस्कृतिक रूप से समृद्ध लोग थे लेकिन यूरोपीय लोगों के द्वारा वहां बसने के लिए किए गए युद्ध की प्रक्रिया में हार गए थे। इन संसाधनों पर सैन्य एवं राजनैतिक नियंत्रण के लिए संघर्ष ने अन्ततः लातिन अमेरिकी देशों को एक अद्वितीय सांस्कृतिक सामजंस्य में बदल दिया। 20 वीं सदी की इस समृद्ध विरासत तथा राजनैतिक - आर्थिक उथल-पुथल ने एक बहुत ही समृद्ध तथा विविधपूर्ण साहित्य तथा अन्य सांस्कृतिक धाराओं (संगीत, नृत्य इत्यादि) को जन्म दिया जिसने विश्व का ध्यान आकर्षित किया।

आइए हम भाषा के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण लातिन अमेरिकी देशों एवं क्षेत्रों की सूची देखते हैं, जोकि यूरोप के राष्ट्रों द्वारा प्रशासित हैंः

अंग्रेजी : बेलीज, जमैका, बारबीडास, त्रिनिदाद तथा टोबैगो, गुयाना, आंतीगुआ तथा बारबुदा, सेंट लुसिया, डोमिनिशिय, ग्रेनाडा, सेंट विसेंट तथा ग्रिनाडाइन्स, बाहामस

फ्रांसीसी : हाइली, गुयाना, सेंट पियरे तथा मिकेलोन, फ्रांसीसी आंतीय (यहां फ्रांसीसी नियंत्रण में साल क्षेत्र हैं जोकि संयुक्त रूप से उपरोक्त नाम से जाने जाते हैं।

डच : नीदरलैण्ड, आंतीस, अरूबा, सूरीनाम।

पुर्तगाली : ब्राज़ील (लातिनी अमेरिका में केवल एक ही पुर्तगाली भाषी देश है किंतु इसकी जनसंख्या लगभग सभी स्पेनी भाषी देशों के बराबर है)

स्पेनी : अर्जेटीना, चिली, कोलंबिया, क्यूबा, कोस्टा रिका, बोलीविया, इक्वाडोर, इल सैटबाडोर, ग्वाटेमाला, होन्डुरास, मैक्सिको, निकारागुआ, पनामा, पारागुआमा, पेरू, उष्गुण्आय, वेनेजुऐला।

प्यूर्तो-रिको में स्पेनी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। यहां पर लातिन अमेरिकी तथा दक्षिण अमेरिका के अंग्रेजी भाषी देशों के बीच अंतर करने की जरूरत है। यहां 'लातिन' से हम समझते हैं, वे भाषाएं जोकि लातिन से निकली हैं, जैसे स्पेनी, पुर्तगाली तथा फ्रांसीसी। इसलिए अंग्रेजी भाषी देश लातिन अमेरिकी के नहीं बल्कि अंग्रेजी भाषी दक्षिण अमेरिका के हिस्से हैं और इसीलिए हम प्रमुखतः दक्षिण अमेरिका के अंग्रेजी भाषी देशों के साहित्यों पर नहीं बल्कि दक्षिण अमेरिका के उन हिस्सों से संबंधित साहित्य एवं सांस्कृतिक अनुभूतियों पर ध्यान क्रेन्द्रित करेंगे जहां लातिन आधारित भाषाएं जैसे- स्पेनी, पुर्तगीज़ तथा फ्रांसीसी का प्रयोग होता है।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि बहुत सारे लातिन अमेरिकी हिस्सों की अपनी क्रेयोल (Creloy) है, जोकि यहां पर प्रयोग में लाई गई लातिन भाषा पर आधारित है और कुछ पुरानी भाषाएं भी जीवित हैं। लातिन अमेरिकी साहित्य में संस्कृति से जुड़ी चेतनाएं प्रायः दर्शित होती हैं। यह एक कारण है जो लातिन अमेरिकी साहित्य को, विश्व के दूसरे हिस्सों में संबंधित लातिन भाषाओं में लिखे गए साहित्य से प्रायः पृथक रूप में चित्रित करना है।

10.3 लातिन अमेरिकी साहित्य का अवलोकन

जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, कि यहा पर तीन प्रमुख लातिन अमेरिकी भाषाएं हैं स्पेनी, पुर्तगाली तथा फ्रांसीसी। आइए इन सभी भाषाओं में साहित्य की मुख्य धाराओं को संक्षेप में देखते हैं। यह हमें विश्व की विभिन्न संस्कृतियों में इनके अभिग्रहण को समझने में सहायक होगा।

10.3.1 लातिन अमेरिका का स्पेनी साहित्य

यह हिस्पैनिक-अमेरिकी साहित्य के नाम से भी जाना जाता है। गद्य लेखन के संबंध में हम तीन प्रमुख काल खण्डों की पहचान कर सकते हैं

क) 1940 तक : यह 19वीं शताब्दी के यथार्थवाद पर आधारित था किन्तु इसकी अपनी कुछ स्थानीय विशेषताएं तथा विषय थे।

तीन मुख्य विषय इस प्रकार बताए जा सकते हैं : (i) स्थानीय उपन्यास जिनमें प्रकृति एक अजेय शक्ति है जो हमेशा अपने नियमों को थोपती है और मनुष्यों को इसमें अंश की भांति होना पड़ेगा क्योंकि सारी टकराव बेकार हैं। (ii) देशज उपन्यासः जिनमें खेतों द्वारा स्थानीय भारतीयों (अमेरिकी भारतीय) के शोषण की आलोचना की गई है (iii) राजनैतिक उपन्यासः जोकि मुख्यतयाः मैक्सिको की क्रान्ति के विषय से संबंधित है।

ख) 1940 के दशक से 1960 के दशक के मध्य : यह 'जादुई यथार्थवाद' का समय है, और इस समय के बहुत सारे लेखक विश्व-विख्यात हैं। इनमें एक अनुभूति है। अस्मिता, शाश्वता, विश्व काल तथा ऐसे विषयों से संबंधित इनके प्रश्न एवं चिन्ताओं ने उस पूरे विश्व समुदाय को अपनी ओर खींचा जो द्वितीय विश्व युद्ध एवं इसके परिणामों से त्रस्त था। इस समय का एक अत्यंत महत्वपूर्ण लेखक अर्जेंटनियन खार्जे लुईस है, जिसको विश्व की विभिन्न भाषाओं में स्वीकृति मिली।

ग) नए उपन्यास : लगभग 1960 के दशक से एक नए तरह के गद्य साहित्य का उदय हुआ जोकि यूरोपीय तथा अमेरिकी लेखकों से प्रभावित था। अपनी स्वयं की परंपरा में इन सब चीज़ों को मिश्रित करते हुए उन्होंने भाषा तथा वाक्यशैली (वर्णन) के नव आयामों की खोज की। ये लेखक माया तथा दूसरी स्थानीय सभ्यताओं के भारतीय समाज, तानाशाही पात्रों तथा अमेरिकीयों की अस्मिता के प्रश्नों/विषयों से संबंधित परम्परागत विषयों को कभी नहीं भूले। इस धारा के महत्वपूर्ण लेखक विश्वविख्यात है जैसे गैब्रियल गर्सिया मार्केज (कोलम्बिया) मारियो वगीस लाओस (पेरू), टयूलियो कोतीजार (अर्जेटिना), कार्लोस फेऐन्टेस (मैक्सिको), इसाबेल आलेदें (चिली) इत्यादि। कविता के संबंध में हिस्पैनियो-अमेरिकी साहित्य से सर्वाधिक अनूदित कवि हैं- रूबेन दारियो (निकारागुआ), गाब्रियेला मिस्त्राल (चिली, नोबेल पुरस्कार, 1945), पाब्लो नेरूदा (चिली, नोबेल पुरस्कार, 1971) तथा निकोलस गीयेन (क्यूबा)।

जहां तक नाटक का संबंध है लातिन अमेरिका में नाटककारों की संख्या कम रही है। अर्जेटीना के मैन्युल प्युईग ने उपन्यास तथा नाटक दोनों लिखे जोकि सफल रहे। साहित्य नाटक विधा में कोई महत्वपूर्ण योगदान के लिए नहीं जाना जाता।

10.3.2 लातिन अमेरिका का फ्रांसीसी साहित्य

जैसा कि पहले बताया गया है लातिन अमेरिका में बहुत सारे फ्रांसीसी भाषी देश है। 19वीं सदी के अन्त तथा 20वीं सदी के पूर्वार्ध से, नैग्रीट्यूड साहित्यिक तथा सामाजिक आन्दोलन की शुरूआत से इनका साहित्य महत्वपूर्ण था। वास्तव में, नैग्रीट्यूड के दो संस्थापक सदस्य ऐमे सेज़ैर तथा ल्यिो दमास लातिन अमेरिका से थे। ल्यिो दामास को अपनी मूल कृतियों के लिये तो महत्वपूर्ण स्थान मिला ही साथ ही साथ वे गुयाना की लोक कथाओं के संकलन के लिऐ भी जाने गए। यह संकलन पहली बार 1943 में 'वेइयेनु न्वाट' नाम से प्रकाशित हुआ और बाद में मार्न्ट्रियाल कनाडा से इनके कई संस्करण भी छपे। अपने जीवन के अन्तिम वर्षो के दौरान इन्होंने वांशिगटन के हावर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ाया।

ऐमे सेजैर नैग्रीट्यूड की एक महत्वपूर्ण आवाज थे जिन्होंने लातिन अमेरिकी फ्रांसीसी भाषी समाज की भावनाओं को साहित्यिक तथा राजनैतिक स्वर प्रदान किया। फ्रांसीसी साहित्य में इनको बहुत स्वीकृति मिली तथा इनकी एक प्रकाशित पुस्तक की भूमिका आन्द्रे ने लिखी जो अपने 'मैनिफेस्टो ऑफ सर्रेलिज़्म' के लिऐ जाने जाते हैं। कुछ अन्य महत्वपूर्ण लातिन अमेरिकी फ्रांसीसी साहित्यकार है - ऐदुआर ग्लिसों, फ्रॉत्सं फानौं आदि।

अधिकतर दूसरे विश्व युद्ध के समय से लातिन अमेरिकी फ्रांसीसी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता यूरोपीय महाद्वीप से अमेरिका उपमहाद्वीप की तरफ इसके केन्द्र का बदलाव है। ऐमे सेज़ैर से पहले फ्रांसीसी लातिन अमेरिकी समाजों का साहित्य यूरोपीय फ्रांसीसी साहित्य का हिस्सा माना जाता था। ऐमे सेज़ैर के नैग्रीट्यूड में योगदान से इनको अपनी अलग पहचान मिली। यद्यपि यह साहित्य फ्रांसीसी में लिखा गया था, इसको मौलिक भाषा तथा साथ ही साथ अनुवाद में भी समस्त विश्व में बहुत स्वीकृति मिली। अमेरिकी उपमहाद्वीप में केंद्रित होने के कारण यह अमेरिकी उपमहाद्वीपीय विषयों के नज़दीक आया। इनमें अमेरिका के अश्वेत आदोलनों की चेतना तथा अस्मिता के प्रश्न अथवा मुद्दे महत्वपूर्ण हैं।

10.3.3 लातिन अमेरिका का पुर्तगाली साहित्य

ब्राज़ील लातिन अमेरिका का एक बड़ा देश है। यद्यपि यह अमेरिका का एकमात्र पुर्तगाली भाषी राष्ट्र है, लेकिन इसकी जनसंख्या लातिन अमेरिका के समस्त स्पेनी भाषी राष्ट्रों के समतुल्य है। ब्राज़ीली पुर्तगाली की अपनी भाषाई विशेषताएं हैं, जोकि प्रायः इसको उस पुर्तगाली भाषा से पृथक करती है, जो पुर्तगाल में बोली जाती है। ब्राज़ीली साहित्य, सिनेमा तथा टेलिविजन के कार्यक्रम पुर्तगाल में बहुत प्रसिद्ध हैं। पुर्तगाली समाज ने ब्राज़ील की लिखित एवं दृश्य साहित्यिक कृतियों को न केवल स्वीकार किया है बल्कि उनकी इस स्वीकृति में औपनिवेशिक अतीत का कोई प्रभाव दिखाई नहीं देता। हाल के समय का ब्राज़ीली साहित्य यूरोपीय चेतना की अपेक्षा अमेरिकी महादेशीय चेतना में अधिक रचा-बसा है।

10.4 लातिन अमेरिकी महत्वपूर्ण लेखक

हम इससे पहले देख चुके हैं कि लातिन अमेरिका में तीन प्रमुख भाषाएं है। अभी हम महत्वपूर्ण लातिन अमेरिकी लेखकों का एक संक्षिप्त अवलोकन करेंगे।

10.4.1 लातिन अमेरिकी स्पेनी लेखन

लातिन अमेरिका के अधिकांशतः स्पेनी लेखक अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं। किन्तु कुछ साहित्यिक कृतियां बहुत विख्यात हैं। उदाहरण स्वरूप गार्बियल गार्सिया मार्केज की (हण्ड्रेड ईयर्स ऑफ सोलीट्यूड) को वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया गया है। यह यूरोप की लगभग सभी भाषाओं में उपलब्ध है। भारत के कई विश्वविद्यालयों के विभागों में इसे साहित्य के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। गार्बियल गार्सिया मार्केज़ की अंग्रेजी में उपलब्ध कुछ अन्य विख्यात पुस्तकें है - द ऑटम ऑफ द पैट्रियार्क, लव इन द टाईम्स ऑफ कोलेरा, क्रॉनिकल ऑफ ए डिक्लेयरड डैथ इत्यादि। 1982 में इनको साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला।

ईसाबेल आलेदें

ईसाबेल ओलेदें (चिली) अपनी पुस्तक (द हाउस ऑफ स्प्रिटस) के लिए बहुत विख्यात है, जो 1982 में स्पेनी में प्रकाशित हुई। यह पुस्तक चिली में पिनोयेट की तानाशाही के दौरान सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालती है। इसके प्रकाशन के तुरंत बाद विभिन्न प्रमुख भाषाओं में इसके अनुवाद हुए। इस पुस्तक को सभी लातिन अमेरिकी देशों में पूर्ण स्वीकृति मिली। इन्होंने एक दर्जन से अधिक उपन्यास लिखे हैं। कुछेक इंटरनेट से उपलब्ध जानकारी के आधार से कहा जा सकता है। इनकी किताबें तीस से ज्यादा भाषाओं में अनुदित हुई है। वे स्पेनी की सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली लेखिका हैं।

मारियो वागीस ल्योसा

पेरू के मारियो वागीस ल्योसा अपने उपन्यासों (द टाईम्स ऑफ द हीरो), (द ग्रीन हाउस), (कन्वेंशन इन द कैथेहाल) के लिए जाने जाते हैं। 2010 में इनको साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। इनका उपन्यास ''कैप्टन पैटोजा एंड द स्पेशल सर्विस' पेरु की सेना की भूमिका का वर्णन करता है तथा बताता है कि कैसे जंगलों में सैनिकों के लिये औरतों को लाया जाता था। इन्होंने बहुत सारे उपन्यास लिखे हैं जो लातिन अमेरिकी राजनैतिक तथा सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करते हैं। इनका लेखन यूरोप की सभी भाषाओं में उपलब्ध है तथा ब्राज़ील, अमेरिका, यूरोपीय राष्ट्रों में इनकी बड़ी ही प्रशंसा हुई है।

धूलियो कोतीजार

धूलियो कोतीसार का बचपन अर्जेंटीना एवं बेटिमयम में बीता। यूनेस्को में अनुवादक का कार्य करते हुए फ्रांस में भी इन्होंने लम्बा समय बिताया। इन्होंने फ्रांसीसी तथा अंग्रेजी साहित्यिक कृतियों का स्पेनी भाषा में अनुवाद किया है। यद्यपि इन्होंने स्पेनी में लिखा, इनका अधिकतर साहित्यिक लेखन पेरिस में फ्रांसीसी भाषी समाज के बीच में हुआ। ये 1963 में प्रकाशित अपनी कहानियों तथा उपन्यास 'हॉप्सकाप' के लिए सर्वाधिक जाने जाते हैं। इनका उपन्यास 'हॉट स्काय' पूरे अमेरिका, यूरोप तथा अन्य देशों में बहुत प्रसिद्ध है, तथा विश्व की विभिन्न भाषाओं में अनुदित हो चुका है।

खार्खे लुईस बारख़ेस

खार्खे लुईस बारख़ेस अर्जेंटीना के एक कहानीकार, निबंधकार, कवि तथा अनुवादक थे। वे यूरोप की बहुत सारी भाषाओं के अच्छे जानकार थे। ये लम्बे समय तक स्विटज़रलैंड में रहे तथा जीवन के अंतिम वर्षों में अपनी मृत्यु तक जिनेवा में समय बिताया। इनका लेखन बहुत अधिक अनूदित हुआ तथा अमेरिका एवं यूरोप के बहुत सारे देशों में प्रकाशित हुआ। इनकी बहुत सारी कहानियां अनूदित हो चुकी हैं, तथा भारतीय साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। खार्खे लुईस अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कहानियों के लिए जाने जाते हैं।

गाब्रिऐला मिस्त्राल

लुसिला गोदाई आहकायागा चिली की एक कवयित्री हैं जिन्होंने गाब्रिऐला मिस्त्राल के नाम से लिखा। 1945 में इनको साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ और इस पुरस्कार को प्राप्त करने वाली वे अब तक की एकमात्र लातिन अमेरिकी महिला हैं। वे दोनों विश्व युद्धों के बीच के लंबे समय तक फ्रांस तथा इटली में रही तथा विविध प्रकार की साहित्यिक एवं राजनैतिक परियोजनाओं पर काम किया। बहुत सारे यूरोपीय राष्ट्रों तथा अमेरिका में इन्होंने चिली के राजनैयिक के तौर पर भी काम किया। इनकी कविताओं के महत्वपूर्ण विषय प्रकृति, प्रेम तथा लातिन अमेरिकी अस्मिता हैं।

अपने समय के सन्दर्भ में, लातिन अमेरिकी अस्मिता पर एक स्त्री के नजरिये से इन्होंने बहुत कुछ लिखा। अपने जीवनकाल के दौरान इसके लेखन को सम्पूर्ण अमेरिका तथा यूरोपीय उपमहाद्वीप में बहुत स्वीकृति मिली। लातिन अमेरिकी चेतना को प्रस्तुत करती हुई ये एक कालजयी महान कवयित्री हैं।

निकोलास गीयेन

निकोलास गीयेन क्यूबा के राष्ट्रकवि के रूप में जाने जाते हैं। इनकी रचनाएं 1920 के दशक से प्रकाशित होनी शुरू हुई और उन्होंने तत्कालीन राजनैतिक परिदृश्य को बहुत प्रभावित किया वामपंथी होने के कारण इनको क्यूबा से निष्कासित कर दिया गया हालांकि बाद में फिदेल कास्त्रों के शासन काल में इनका स्वागत किया गया जो 1959 में सत्ता में आए थे। 1930 के दशक से 1950 के दशक तक क्यूबा में तानाशाही तथा राजनैतिक उथल-पुथल का दौर था। इस समय के दौरान गीयेन अधिकतर जेल में रहे तथा इनको क्यूबा छोड़ना पड़ा। इन्होंने लातिन अमेरिकी देशों, यूरोप तथा चीन की यात्राएं की। क्यूबा में एक वामपंथी स्वर के रूप में इनको बहुत स्वीकृति मिली। 1954 ई. में इनको स्टालिन शांति पुरस्कार प्रदान किया गया (बाद में लेनिन शांति पुरस्कार)। निकोलास गीयेन की कविताओं का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इन्होंने स्पेनी में नैग्रिस्ता कविताएं लिखी। इनकी कविताएं एफ्रो-लातिन अमेरिकी अस्मिता को प्रदर्शित करती हैं। इसने गीयेन को सभी अश्वेत आन्दोलनों का एक महत्वपूर्ण स्वर बना दिया और इसीलिए इनको अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नैग्रीस्टा कवि के रूप में स्वीकृति मिली जिन्होंने क्यूबा के विविध सांस्कृतिक तत्वों तथा धाराओं को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया।

रूबेन दारियो

ये निकारागुआ से थे, तथा इन्होंने लातिन अमेरिकी साहित्य में आधुनिकतावाद की शुरूआत की। 1880 के दशक से इनकी कृतियां प्रकाशित हुई तथा स्पेन एवं दूसरे लातिन अमेरिकी देशों में इनको बहुत स्वीकृति मिली। स्पेन तथा फ्रांस में कविता के परम्परागत रूपों से इन्होंने बहुत अधिक प्रभाव ग्रहण किया तथा ये रूप एवं अन्तःवस्तु

के समकालीन प्रयोगवाद से प्रभावित थे। इनकी कविता में राजनीतिक व्यंजनाएं लक्षित होती थी जो अमेरिकी अस्मिता के गहरे रूप में जुड़े हुए मुद्दों तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के उभरते प्रभाव को दर्शाती थी।

पाब्लो नेरूदा

ये चिली के थे तथा 1971 ई. में इन्हें साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। औपनिवेशिक समय के दौरान ये वर्मा (म्यंमार), सिलोन (श्रीलंका), बताविया (जर्काता) तथा सिंगापुर में कूटनीतिक मिशनों पर रहे। इन्होंने पूर्व तथा साथ ही साथ पश्चिम को बहुत अधिक उज़ागर किया जो दोनों ही इनके जीवन के अनुभवों का हिस्सा थे। एक वामपंथी होने के कारण नेरूदा की संपूर्ण विश्व में एक महत्वपूर्ण लातिन अमेरिकी स्वर के रूप में अत्यधिक स्वीकृति मिली और विशेषकर सोवियत संघ तथा चीन के द्वारा अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर इनकी सर्वाधिक जानी जाने वाली पुस्तकें हैंः- बन्ते पोलमस वे आभोर, रेसिदेन्सिया एन ला तिपेर्रा, कान्तो चेनेराल, मेमोरियाल दे ईसला नेग्रा।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता से इनको अत्यधिक प्रभावित माना गया है। कभी-कभी रवीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्यिक लेखन से सीधे अनुवाद करने का आरोप भी इन पर लगा है। शक्ति चट्टोपाध्याय ने नेरूदा की कविताएं बांग्ला में अनूदित की हैं।

10.4.2 लातिन अमेरिकी पुर्तगाली लेखन

ब्राज़ीली पुर्तगाली लेखन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है, कि यह पुर्तगाली साहित्य को प्रकाश में लाता है। पुर्तगाल एक बहुत छोटा देश है, और पश्चिमी यूरोप के अधिकतर राष्ट्रों की तुलना में यह आर्थिक तथा औद्योगिक स्तर पर बहुत विकसित नहीं हुआ है। पुर्तगाल और ब्राज़ील के मध्य पारम्परिक राजनैतिक तथा सांस्कृतिक संबंध एक उपनिवेश तथा उपनिवेशक जैसे नहीं है। यह पुर्तगाल में ब्राज़ीली पुर्तगाली साहित्य के अभिग्रहण को आसान बना देता है और इसीलिए समस्त यूरोप में भी। यह विचारणीय है कि 19वीं सदी तक ब्राज़ीली भी अधिकांश उसी पुर्तगाली में लिखते थे जैसा कि पुर्तगाल में प्रयुक्त होती थी।

20वीं शताब्दी में साहित्यिक भाषा तथा जीवन के दूसरे क्षेत्रों में ब्राज़ीली प्रयोग अधिक से अधिक अपनाए गए। यहां तक कि पुर्तगाली मीडिया ने ब्राज़ील में बने हुए बहुत सारे लोकप्रिय है लिवियन धारावाहिक अपने यहां प्रसारित किए। यदि आप अंग्रेजी अथवा यूरोप की दूसरी भाषाओं में उपलब्ध पुर्तगाली लेखकों की सूची देखें तो शायद ही आप पुर्तगाल तथा ब्राज़ील के पुर्तगाली लेखकों के मध्य कोई अन्तर पाएं, यह दुर्लभ ही होगा। इसका अर्थ यह नहीं है, कि ब्राज़ीली साहित्यकार की अपनी कोई अस्मिता नहीं है, यह केवल सिद्ध करता है कि ब्राज़ीली साहित्य को पुर्तगाली भाषी साहित्य की तरह वैश्विक स्तर पर स्वीकृत किया गया है। 19वीं सदी के मध्य में ब्राज़ीली साहित्यिक अस्मिता एक सुदृढ़ रूप होना प्रारंभ करती है जो एलवैरिस कि एजिवैदो के चारों ओर केन्द्रित था। इनका उपन्यास 'ऐ नाइट एट दे टेवरन' तथा कविता संग्रह 'टवन्टी ईयर ओल्ड लॉयरी' यूरोप तथा अमेरिकी महाद्वीप में प्रसिद्ध हुआ। इस समय के दूसरे महत्वपूर्ण कवि कैस्ट्रो एटिवस थे जिन्होंने अश्चेतों तथा दासता का सामाजिक एजेंडा प्रस्तुत किया। इसी कारण स्वरूप 19वीं शताब्दी में ब्राज़ीली साहित्य ने ब्राज़ीली अस्मिता के बनने में सहायता की जोकि आधारित थी (i) ब्राज़ील की समृद्ध प्रकृति (ii) अश्वेत तथा मूल अमेरिकी धरोहरों पर।

19वीं शताब्दी के अंत तक ब्राज़ीली साहित्य अन्य यूरोपीय देशों में पहुंचने लगा था। 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में ब्राज़ीली साहित्य सीधे रूप से आधुनिकतावाद, अतियथार्थवाद तथा ऐसी दूसरी यूरोपीय धाराओं, विशेष रूप से फ्रांसीसी साहित्य से प्रभावित था। 20वीं शताब्दी की शुरूआत से यूरोप तथा दूसरे अमेरिकी महाद्वीपीय राष्ट्र ब्राज़ीली लोकसाहित्य तथा लोकसंगीत का इसकी मुद्रित श्रव्य तथा दृश्य-श्रव्य प्रस्तुतियों का आनन्द लेना शुरू कर चुके थे। यह समृद्ध विरासत साहित्य में प्रयोग की गई, जिसने 20वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध के ब्राज़ीली साहित्य को एक अलग विशिष्टता प्रदान की और इस विशिष्टता के साथ यह साहित्य यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वीकृत हुआ। यहां तक कि आज तक भी हम देखते हैं कि ब्राज़ील की यह विशिष्टता यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमेरिका की संस्कृति में एक महत्वपूर्ण प्रभाव बनाऐ हुए हैं। अधिकांश ब्राज़ीली साहित्य अंग्रेजी तथा स्पेनी में उपलब्ध है, परन्तु विश्व की दूसरी भाषाओं में नहीं। इंटरनेट सीट 'talquabnaente' ने अंग्रेजी में उपलब्ध

बहुत सारी ब्राज़ीली साहित्य की पुस्तकों को सूचीबद्ध किया है। ब्राज़ीली लेखक पाउवो चिसेला की पुस्तकें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है, जिसने उन्हें विश्व में अत्यधिक पढ़े जाने वाला लेखक बना दिया है। 20वीं शताब्दी के अन्त से इनकी पुस्तकें विश्व की बहुत सारी भाषाओं में उपलब्ध है। इनकी एक पुस्तक 'द एलकेमिस्ट' विश्व की 70 से अधिक भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। इनकी पुस्तकों का अंग्रेजी अनुवाद भारत में बहुत अधिक उपलब्ध है।

10.4.3 लातिन अमेरिकी फ्रांसीसी लेखन

20वीं शताब्दी के प्रारंभ से लातिन अमेरिकी देशों में फ्रांसीसी लेखन बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो गया और विश्व के सामने इसने अपनी स्वयं की पहचान बनाई। कुछ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात लेखक/कवि हैं:

ऐमे सेजैट

ये फ्रांसीसी साहित्य में नैग्रीट्यूड आन्दोलन के संस्थापकों में से एक है। अपनी कविताओं में ये कैरेबियन जीवन एवं संस्कृति को चित्रित करते हैं, जो कि उस समय यूरोपीय लोगों के लिए एक नया विश्व था। इनकी शिक्षा फ्रांस में हुई। ये ऐन्द्र जैसे महत्वपूर्ण चिंतकों से गहरे रूप से जुड़े हुए थे। 1947 ई. में प्रकाशित इनकी पुस्तक 'नोट बुक ऑफ ए रिटर्न टू द नैटिव लैन्ड' फ्रांस तथा विश्व के दूसरे भागों द्वारा औपनिवेशिक योजना काल में अश्वेत अफ्रीका लोगों की सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतिपादन करती है। इनकी साहित्यिक कृतियां 20वीं शताब्दी के मार्टिनक्यू की प्रमुख आवाज बनी है।

ऐदुआर ग्लिसो

कैरेबियन द्वीप में मार्टिनक्यू से आने वाले एक महत्वपूर्ण राजनैतिक एवं साहित्यिक यूरोप तथा अमेरिकी उप महाद्वीप में इनकी बहुत स्वीकृति मिली। इन्होंने फ्रांस तथा यू.एस. में अध्यापन कार्य किया। अपने राजनैतिक विचारों के कारण, 1961 से 1965 तक इनको एक बार सरकार द्वारा फ्रांस में नजरबंद कर दिया गया। तब फ्रांस से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। ये कैरेबियन द्वीप में नैग्रीट्यूड आन्दोलन के विचारों के महत्वपूर्ण आलोचक थे और इन्होंने Geotile को एक महत्वपूर्ण साहित्यिक आन्दोलन के रूप में स्थापित किया। ऐमे सेज़ैर से भिन्न जो अफ्रीकी पतन के सन्दर्भ में अस्मिता के प्रश्नों को समझते थे, ऐदुआर ग्लिसो ने लातिन अमेरिका के 'समय एवं स्थान' के संदर्भ में भाषा एवं अस्मिता के प्रश्नों पर चर्चा की।

फ्रांसीसी कैरेबियन अस्मिता तथा दक्षिण अमेरिका के दूसरे हिस्सों में इससे संबंधित अथवा मिलते-जुलते मुद्दों के मध्य इन्होंने तुलना की, इसीलिए कैरेबियन संस्कृति के लिए एक नई अस्मिता का निर्माण हुआ जो यूरोप अथवा अफ्रीका नहीं अपितु लातिन अमेरिकी चेतना पर केन्द्रित थी।

फ्रांत्स फानो

दूसरे विश्वयुद्ध के संकटग्रस्त समय में जीवन बिताते हुए, इन्होंने सैन्य जीवन तथा नस्लवाद के विविध रूपों का अनुभव किया, जो कैरेबियन द्वीप में हो रहा था। इनके पूर्वज फ्रैको-कैरिकी एवं अटिजरीयाई थे और इन्होंने एक मनोचिकित्सक के रूप में नाइजीरिया में कार्य किया जब वह फ्रांस का उपनिवेश था। उस संकटग्रस्त समय में विभिन्न महाद्वीपों से उनके ये सभी अनुभव इनकी पुस्तक 'ब्लैक स्किन, व्हाइट मास्क' में प्रस्तुत हैं। इनकी एक अन्य प्रसिद्ध पुस्तक का अंग्रेजी में 'द रैड ऑफ द अर्थ' शीर्षक से प्रकाशन हुआ। ये ऐमे सेजैट के विद्यार्थी थे जिनका सारे जीवन भर इनके ऊपर गहरा प्रभाव रहा। 36 वर्ष की अल्पायु में ही इनकी मृत्यु हो गई थी किंतु उनकी राष्ट्रीय रचनाएं विश्व के कई देशों के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनों के लिए प्रेरणा का स्रोत मानी जाती हैं।

लियो दमास

ये फ्रांसीसी साहित्य में नैग्रीट्यूड आन्दोलन के तीन संस्थापकों में से एक थे। इनकी कविताएं जैसे 'ब्लैक-लेवल' नैग्रीट्यूड के बौद्धिक ढांचे में फ्रांसीसी कैरेबियन द्वीप की अस्मिता एवं संस्कृति पर विचार प्रस्तुत करती है। इनको फ्रांसीसी लातिन अमेरिका के प्रमुख बौद्धिक एवं साहित्यिक हस्ताक्षर के रूप में स्वीकार किया गया और अपने विचारों के ऊपर इन्होंने यूरोप, यू.एस.ए. तथा लातिन अमेरिकी विश्वविद्यालयों में अनेकों व्याख्यान दिए।

फ्रांसीसी लातिन अमेरिका के दूसरे देशों से भी कुछ अच्छे लेखक हैं, लेकिन उन्होंने विश्व के बहुत से हिस्सों के साहित्य को प्रभावित नहीं किया है। अधिक से अधिक ये फ्रांसीसी साहित्य के महत्वपूर्ण स्वर बने रहे। यद्यपि यहां पर यह विचारणीय है कि हैनी, फ्रांसीसी मुपाना, सेंट पियरे तथा माईक्यूलोन जैसे देशों की साहित्यिक रचनाएं फ्रांसीसी भाषी साहित्य के नाम से जाने वाले, फ्रांसीसी साहित्य के ही एक भाग के रूप में फ्रांस में बहुत अच्छी तरह से स्वीकृत की गई। यह अनुवाद अध्ययन का एक आयाम है, जब हम पाते हैं कि विश्व के एक हिस्से में एक भाषा में लिखा गया साहित्य, विश्व के दूसरे भाग में उसी भाषा में अभिग्रहित होता है। यह अधिकाशंत अन्तः भाषिक सांस्कृतिक अनुवाद की तरह है।

10.5 सारांश

आप देख चुके हैं, कि दक्षिण अमेरिका में अंग्रेजी लातिन आधारित तीन भाषाएं (फ्रांसीसी, पुर्तगाली एवं स्पेनी) एक प्रभावशाली भाषा समूह के रूप में विद्यमान हैं। हमने यहां पर अंग्रेजी साहित्य की चर्चा नहीं की जैसा कि यह दक्षिणी अमेरिका का हिस्सा तो है, किन्तु निश्चित रूप से लातिन अमेरिका का हिस्सा नहीं है।

लातिन अमेरिकी लेखक यूरोप, यू.एस.ए. तथा विश्व के दूसरे हिस्सों में स्वीकृत तथा अनूदित हुए हैं। यहां अनुवाद अध्ययन के संदर्भ में हमने उन संबंधित यूरोपीय देशों में अभिग्रहण की चर्चा की जिनसे कि ये भाषाएं (फ्रांसीसी, पुर्तगाली एवं स्पेनी) मूल रूप से सम्बद्ध है तथा विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों तथा घटनाओं के कारण विश्व के दूसरे भागों में विस्तृत हुई। यह एक महत्वपूर्ण पहलू है कि यह अभिग्रहण आगे चलकर प्रायः साहित्यिक कृतियों के वैश्विक अभिग्रहण एवं अनुवाद में सहायता प्रदान करता है। हमने अंग्रेजी के भौगोलिक विभाजन को समझा है और उन महत्वपूर्ण लातिन अमेरिकी लेखकों के अभिग्रहण तथा अनुवाद का अध्ययन किया है, जिनका संपूर्ण विश्व के विभिन्न साहित्यिक तथा राजनैतिक आन्दोलनों में योगदान रहा है।

10.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

1) लातिन अमेरिका की भौगोलिक तथा भाषिक परिस्थितियों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

2) लातिन अमेरिका के स्पेनी साहित्य का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

3) लातिन अमेरिका के किन्ही तीन महत्वपूर्ण लेखकों के साहित्यिक अवदान का परिचय दीजिए।

4) लातिन अमेरिका के फ्रांसीसी तथा पुर्तगाली साहित्य पर संक्षेप में विचार कीजिए।

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Baker, Mona (ed.) 1998, *Routledge Encyclopedia of Translation Studies*, New York and London, Routledge.
- Baker, Mona (ed.) 2009, *Translation Studies : Critical Concepts in Linguistics* (Vol. iv), New York, Routledge.
- Vatestine, Denial (ed.) 2004, *Encyclopedia of Latin, American and Carabian Literature*, Champion and Hall, Routledge.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY